मृच्छकटिकम्

चारुदत्त का चरित्र-चित्रण

मृच्छकटिक में चारुदत्त को सुन्दर, परोपकारी, गुणग्राही, उदार, भावुक, पवित्रप्रेमी, सत्यवक्ता, शरणागतवत्सल, परम क्षमाशील आदि रूपों में चित्रित किया गया है। वह 'मृच्छकटिक' नामक प्रकरण का धीरप्रशान्त नायक है।

1- व्यक्तित्व : उज्जयिनी नगरी के अति सम्पन्न वंश में चारुदत्त ने जन्म लिया है। उसके वंशज यद्यपि ब्राह्मण थे; तथापि व्यापार के माध्यम से उन्होंने प्रचुर सम्पत्ति अर्जित की थी। अतः वे धनिकों में प्रतिष्ठित थे। परन्तु चारुदत्त एक निर्लोभ और अतिशय उदारवृत्ति का है। वह किसी को निराश नहीं करना चाहता। अतः दान देना उसका स्वाभाविक गुण बन गया है। उसका व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षक है। वह जितना जितना सुन्दर है उतनाही गुणी भी है।

2- यौवनसम्पन्न : वह अभी यौवनसम्पन्न है। प्रथम अंक में चारुदत्त भ्रमवश जब वसन्तसेना पर चादर फेंक देता है तो वह (वसन्तसेना) सुगन्धित चादर (दुपट्टा) सूंघकर कहती है कि अभी चारुदत्त का यौवन उदासीन नहीं है - ~~अनुदासीनमस्य~~

"अनुदासीनमस्य यौवनं प्रतिभासते।"

3- परम उदार : वह परम उदार है। वह किसी को निराश नहीं करना चाहता। यहाँ तक सेंध लगाकर उसके घर में घुस आने वाले चोर का ज्ञान होने पर वह दुःखी हो जाता है क्योंकि वह जानता है कि

Scanned with CamScanner

उसके घर में चुराने लायक कुछ भी नहीं है और चोर का परिश्रम व्यर्थ ही हुआ होगा—"सन्धिच्छेदनाखिन्न एव सुचिरं ~~पश्चान्न~~ पश्चान्निराशो गतः।"

4- अतिशय दयालु: चारुदत्त के मन में प्राणिमात्र के लिए दया है। वह किसी को कभी भी कष्ट नहीं देना चाहता और न किसी को दुःखी देखना चाहता है। इस विषय में चेट (वर्धमानक) ~~अपने स्वामी चारुदत्त के लिए~~ द्वारा अपने स्वामी चारुदत्त के लिए कही गयीं बातें ध्यान देने योग्य हैं—"सुजनं खलु भृत्यानुकम्पकः।" (3/2)

चारुदत्त अपने आराम के लिए किसी को कष्ट देना पसन्द नहीं करता है। ~~वह~~ इसीलिए देर रात में सोई हुई रदनिका को जगाने का निषेध करता है—"अलं सुप्तजनं प्रबोधयितुम्।"

5- शरणागतरक्षक: चारुदत्त शरण में आए हुए की रक्षा करने में अपने प्राणों को भी न्यौछावर करने से नहीं डरता है। शरणागतरक्षण की पराकाष्ठा तब होती है जब षड्यन्त्र रचा कर हत्या के अभियोग में चारुदत्त को मृत्युदण्ड दिलाने वाला शकार भी उसकी (चारुदत्त की) शरण में आकर प्राणरक्षा की भीख माँगता है—"आर्य चारुदत्त ! परित्रायस्व, परित्रायस्व।" चारुदत्त शकार के महाअपराध को भुलाकर ~~शरणागत~~ शरणागत शकार को अभय प्रदान कर देता है।

6- सत्यवक्ता: चारुदत्त सत्यभाषण का प्रेमी है। वह हर परिस्थिति में सत्य ही बोलना चाहता है। जब वसन्तसेना के गहनों की चोरी हो जाती है और चारुदत्त को इसकी सूचना दी जाती है तब चिन्तित चारुदत्त से विदूषक यह कहता है कि थोड़ा झूठ बोलकर इस कष्ट से बचा जा सकता है। इस पर चारुदत्त कहता है कि चरित्र को नष्ट करने वाला झूठ नहीं बोलूँगा—"अनृतं नाभिधास्यामि चारित्रभ्रंशकारम्।"

Scanned with CamScanner

7- धर्माचारपरायण : मृच्छकटिक के प्रारम्भ से ही चारुदत्त एक धर्म-कर्मनिष्ठ व्यक्ति के रूप में देता है। वही देवी-देवताओं की पूजा करने में और उनके लिए बलि-प्रदान के कार्य में आलस्य नहीं करता। उसको नित्य कर्तव्य मानता है। वह नित्य सन्ध्यावन्दन और समाधि भी लगाता है।

8- प्रतिष्ठाप्रेमी : चारुदत्त को अपने कुल की और अपने मान-प्रतिष्ठा का ध्यान सर्वदा रहता है। वह ऐसा कोई भी आचरण नहीं करना चाहता है जिससे उसकी अथवा उसके वंश की मान-प्रतिष्ठा को धक्का लगता हो। वसन्तसेना के गहनों की चोरी के सम्बन्ध में विदूषक द्वारा मूठ बुलवाए जाने पर के उत्तर में कहता है कि चरित्र को नष्ट करने वाले मूठ को मैं नहीं बोलूँगा-

"अनृतं नाभिधास्यामि चारित्रभ्रंशकारकम्।"

9- गुणग्राही एवं कलाप्रेमी : वह एक गुणग्राही के रूप में सामने आता है। वह अच्छी कला का सम्मान करता है। संगीत के प्रति उसकी विशेष रुचि है। वह वीणा को बहुत पसन्द करता है। वह रेभिल के संगीत को सुनकर आनन्द का अनुभव करता हुआ संगीत और रेभिल दोनों की प्रशंसा करता है।

10- आदर्श प्रेमी : मृच्छकटिक में चारुदत्त को एक उच्च कोटि का आदर्श प्रेमी चित्रित किया गया है। वह एक परम सुन्दरी गणिका को चाहता है; किन्तु प्रेम व्यवहार के इस प्रदर्शन में वह गणिका वसन्तसेना ही पहले कदम उठाती है। चारुदत्त को शर्विलक द्वारा कहलाए गए विदूषक के माध्यम से यह ज्ञात होता है कि यह वसन्तसेना उस पर अनुरक्त है।

Scanned with CamScanner

11- पत्नी का महत्त्व समझने वाला : यद्यपि प्रारम्भ से ही वह गणिका वसन्तसेना पर अनुरक्त दिखाई देता है तथापि वह अपनी धर्मपत्नी 'धूता' पर पूरी निष्ठा और अटूट प्रेम रखता है। वह हर समय उसको सम्मान देता है। वह 'धूता' का स्थान सदैव ऊँचा समझता है।

12- आदर्श मित्र : ~~अब~~ चारुदत्त एक आदर्श मित्र है। वह अपने हर मित्र के हर सुख-दुःख में साथ देने को तैयार रहता है। वह किसी की विपन्नता में मित्रता छोड़ने की निन्दा करता है। वह अच्छे मित्र की प्रशंसा करता है।

13- भाग्यवादी : चारुदत्त कर्म की अपेक्षा भाग्य पर अधिक विश्वास करता है। इसीलिए सम्भवतः निर्धन होता चला जाता है। वह धन आदि की प्राप्ति और हानि को भाग्य के अधीन मानता है-

"भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।"

14- उपसंहार : मृच्छकटिक के अनुसार चारुदत्त में प्रायः मनुष्य की सभी विशेषताएँ दिखलाई देती हैं।

Scanned with CamScanner